



Chirag paswan

31 Oct 1982

04:07 AM

Hajipur

Model: Web-MyKundli

Order No: 119832601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 30-31/10/1982
दिन _____: शनि-रविवार
जन्म समय _____: 04:07:00 घंटे
इष्ट _____: 55:27:23 घटी
स्थान _____: Hajipur
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:41:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:10:52 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 04:17:52 घंटे
वेलान्तर _____: 00:16:20 घंटे
साम्पातिक काल _____: 06:53:32 घंटे
सूर्योदय _____: 05:56:02 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:09:29 घंटे
दिनमान _____: 11:13:27 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 13:33:56 तुला
लग्न के अंश _____: 18:26:18 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: रेवती - 2
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: हर्षण
करण _____: गर
गण _____: देव
योनि _____: गज
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: दो-दौलत
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1904	कार्तिक	9
पंजाबी	संवत : 2039	कार्तिक	15
बंगाली	सन् : 1389	कार्तिक	14
तमिल	संवत : 2039	आइपसी	15
केरल	कोल्लम : 1158	तुलम	15
नेपाली	संवत : 2039	कार्तिक	15
चैत्रादि	संवत : 2039	आश्विन	शुक्ल 14
कार्तिकादि	संवत : 2039	आश्विन	शुक्ल 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
 तिथि समाप्ति काल _____ : 21:58:35
 जन्म तिथि _____ : 14
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : उ०भाद्रपद
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 17:18:42 घंटे
 जन्म योग _____ : रेवती
 सूर्योदय कालीन योग _____ : व्याघात
 योग समाप्ति काल _____ : 06:37:02 घंटे
 जन्म योग _____ : हर्षण
 सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
 करण समाप्ति काल _____ : 10:29:48 घंटे
 जन्म करण _____ : गर
 भयात _____ : 27:00:48
 भभोग _____ : 58:13:16
 भोग्य दशा काल _____ : बुध 9 वर्ष 2 मा 0 दि

घात चक्र

मास _____ : फाल्गुन
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शुक्रवार
 नक्षत्र _____ : आश्लेषा
 योग _____ : वज्र
 करण _____ : चतुष्पाद
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : गरुड़
 लग्न _____ : सिंह
 सूर्य _____ : मिथुन
 चन्द्र _____ : कुम्भ
 मंगल _____ : कर्क
 बुध _____ : कुम्भ
 गुरु _____ : सिंह
 शुक्र _____ : कन्या
 शनि _____ : वृष
 राहु _____ : तुला

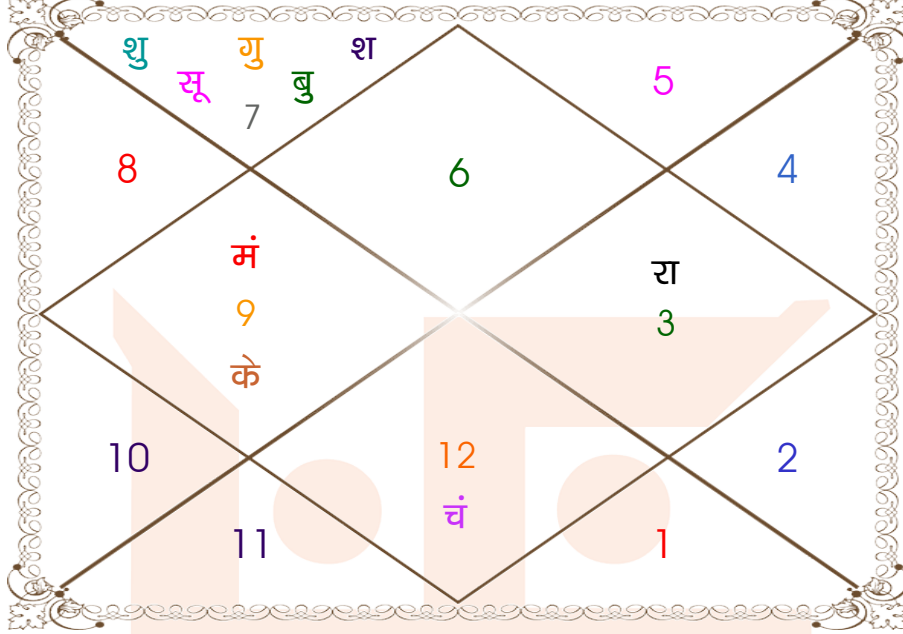


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

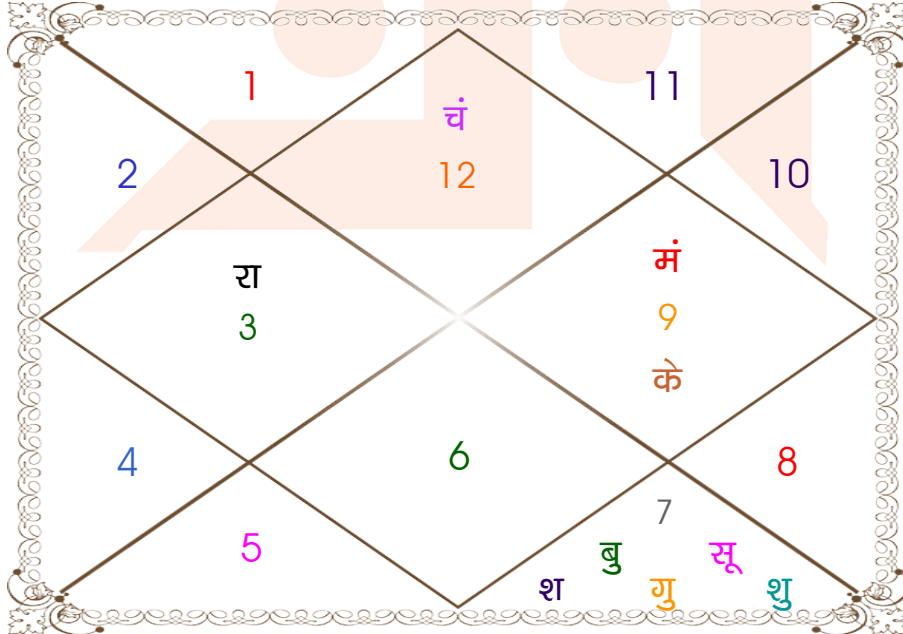


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

चं			रा
के मं	शु बु	सू गु	ल

लग्न कुंडली

रा		चं
ल	गु सू श	शु बु मं के

विंशोत्तरी
बुध 9वर्ष 2मा 0दि
बुध

31/10/1982

31/12/2094

बुध	31/12/1991
केतु	31/12/1998
शुक्र	31/12/2018
सूर्य	30/12/2024
चन्द्र	31/12/2034
मंगल	30/12/2041
राहु	31/12/2059
गुरु	31/12/2075
शनि	31/12/2094

योगिनी
उल्का 3वर्ष 2मा 25दि
सिद्धा

24/01/2022

24/01/2029

सिद्धा	06/06/2023
संकटा	25/12/2024
मंगला	06/03/2025
पिंगला	26/07/2025
धान्या	24/02/2026
भामरी	05/12/2026
भद्रिका	25/11/2027
उल्का	24/01/2029



FUTUREPOINT
Astro Solutions



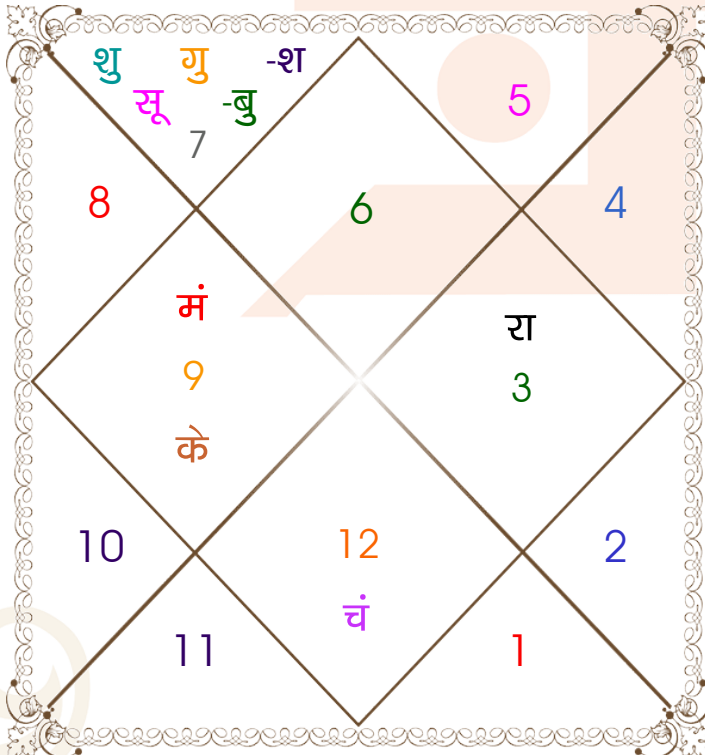
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	18:26:18	324:17:29	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	---
सूर्य			तुला	13:33:56	00:59:58	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	नीच राशि
चंद्र			मीन	22:48:37	13:43:47	रेवती	2	27	गुरु	बुध	चंद्र	सम राशि
मंगल			धनु	05:37:47	00:44:37	मूल	2	19	गुरु	केतु	राहु	मित्र राशि
बुध			तुला	01:16:57	01:38:09	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	मित्र राशि
गुरु			तुला	24:15:22	00:13:06	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	शत्रु राशि
शुक्र	अ		तुला	12:30:53	01:15:14	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	मूलत्रिकोण
शनि	अ		तुला	03:01:03	00:07:13	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	उच्च राशि
राहु	व		मिथु	12:26:02	00:10:09	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	उच्च राशि
केतु	व		धनु	12:26:02	00:10:09	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	उच्च राशि
हर्ष			वृश्चि	09:37:15	00:03:25	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	---
नेप			धनु	01:27:39	00:01:39	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
प्लूटो			तुला	03:39:49	00:02:23	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	---
दशम भाव			मिथु	18:41:49	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	चंद्र	--

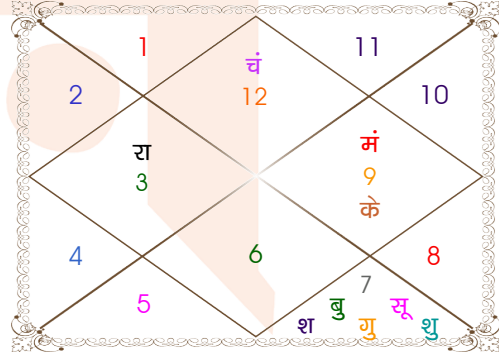
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:36:43

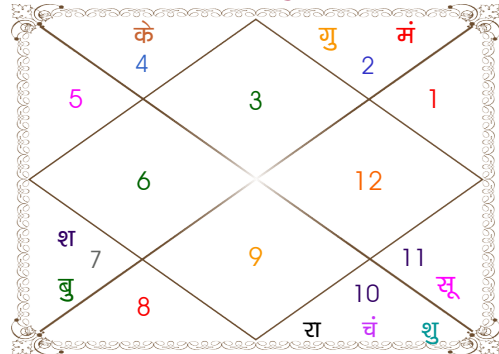
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 03:28:53	कन्या 18:26:18
2	तुला 03:28:53	तुला 18:31:28
3	वृश्चिक 03:34:03	वृश्चिक 18:36:39
4	धनु 03:39:14	धनु 18:41:49
5	मकर 03:39:14	मकर 18:36:39
6	कुम्भ 03:34:03	कुम्भ 18:31:28
7	मीन 03:28:53	मीन 18:26:18
8	मेष 03:28:53	मेष 18:31:28
9	वृष 03:34:03	वृष 18:36:39
10	मिथुन 03:39:14	मिथुन 18:41:49
11	कर्क 03:39:14	कर्क 18:36:39
12	सिंह 03:34:03	सिंह 18:31:28

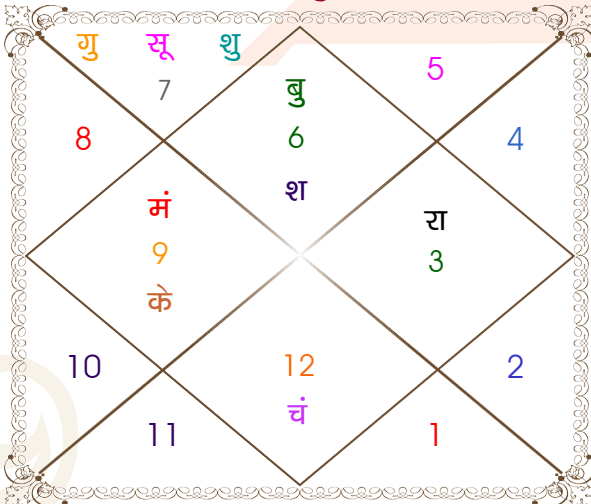
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या 18:26:18	
2	तुला 17:13:36	
3	वृश्चिक 17:34:04	
4	धनु 18:41:49	
5	मकर 20:04:05	
6	कुम्भ 20:31:32	
7	मीन 18:26:18	
8	मेष 17:13:36	
9	वृष 17:34:04	
10	मिथुन 18:41:49	
11	कर्क 20:04:05	
12	सिंह 20:31:32	

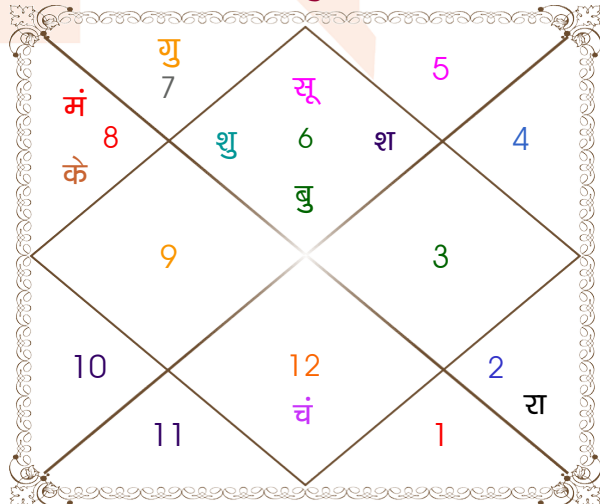
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 9 वर्ष 2 मास 0 दिन

बुध 17 वर्ष 31/10/1982 31/12/1991	केतु 7 वर्ष 31/12/1991 31/12/1998	शुक्र 20 वर्ष 31/12/1998 31/12/2018	सूर्य 6 वर्ष 31/12/2018 30/12/2024	चंद्र 10 वर्ष 30/12/2024 31/12/2034
00/00/0000	केतु 28/05/1992	शुक्र 01/05/2002	सूर्य 19/04/2019	चंद्र 31/10/2025
00/00/0000	शुक्र 28/07/1993	सूर्य 01/05/2003	चंद्र 19/10/2019	मंगल 01/06/2026
00/00/0000	सूर्य 03/12/1993	चंद्र 30/12/2004	मंगल 24/02/2020	राहु 30/11/2027
31/10/1982	चंद्र 04/07/1994	मंगल 01/03/2006	राहु 17/01/2021	गुरु 31/03/2029
चंद्र 01/07/1983	मंगल 30/11/1994	राहु 01/03/2009	गुरु 06/11/2021	शनि 31/10/2030
मंगल 27/06/1984	राहु 19/12/1995	गुरु 31/10/2011	शनि 19/10/2022	बुध 31/03/2032
राहु 15/01/1987	गुरु 24/11/1996	शनि 31/12/2014	बुध 25/08/2023	केतु 30/10/2032
गुरु 22/04/1989	शनि 02/01/1998	बुध 31/10/2017	केतु 31/12/2023	शुक्र 01/07/2034
शनि 31/12/1991	बुध 31/12/1998	केतु 31/12/2018	शुक्र 30/12/2024	सूर्य 31/12/2034
मंगल 7 वर्ष 31/12/2034 30/12/2041	राहु 18 वर्ष 30/12/2041 31/12/2059	गुरु 16 वर्ष 31/12/2059 31/12/2075	शनि 19 वर्ष 31/12/2075 31/12/2094	बुध 17 वर्ष 31/12/2094 00/00/0000
मंगल 29/05/2035	राहु 12/09/2044	गुरु 17/02/2062	शनि 03/01/2079	बुध 28/05/2097
राहु 15/06/2036	गुरु 05/02/2047	शनि 30/08/2064	बुध 12/09/2081	केतु 25/05/2098
गुरु 22/05/2037	शनि 12/12/2049	बुध 06/12/2066	केतु 22/10/2082	शुक्र 26/03/2101
शनि 01/07/2038	बुध 01/07/2052	केतु 12/11/2067	शुक्र 21/12/2085	सूर्य 31/01/2102
बुध 28/06/2039	केतु 19/07/2053	शुक्र 13/07/2070	सूर्य 03/12/2086	चंद्र 01/11/2102
केतु 24/11/2039	शुक्र 19/07/2056	सूर्य 01/05/2071	चंद्र 04/07/2088	00/00/0000
शुक्र 23/01/2041	सूर्य 12/06/2057	चंद्र 30/08/2072	मंगल 12/08/2089	00/00/0000
सूर्य 31/05/2041	चंद्र 12/12/2058	मंगल 06/08/2073	राहु 18/06/2092	00/00/0000
चंद्र 30/12/2041	मंगल 31/12/2059	राहु 31/12/2075	गुरु 31/12/2094	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 9 वर्ष 1 मा 10 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र 30/12/2024 31/10/2025	चंद्र - मंगल 31/10/2025 01/06/2026	चंद्र - राहु 01/06/2026 30/11/2027	चंद्र - गुरु 30/11/2027 31/03/2029	चंद्र - शनि 31/03/2029 31/10/2030
चंद्र 25/01/2025 मंगल 11/02/2025 राहु 29/03/2025 गुरु 08/05/2025 शनि 26/06/2025 बुध 08/08/2025 केतु 26/08/2025 शुक्र 15/10/2025 सूर्य 31/10/2025	मंगल 12/11/2025 राहु 14/12/2025 गुरु 11/01/2026 शनि 14/02/2026 बुध 16/03/2026 केतु 29/03/2026 शुक्र 03/05/2026 सूर्य 14/05/2026 चंद्र 01/06/2026	राहु 22/08/2026 गुरु 03/11/2026 शनि 29/01/2027 बुध 16/04/2027 केतु 18/05/2027 शुक्र 17/08/2027 सूर्य 14/09/2027 चंद्र 29/10/2027 मंगल 30/11/2027	गुरु 03/02/2028 शनि 20/04/2028 बुध 28/06/2028 केतु 27/07/2028 शुक्र 16/10/2028 सूर्य 09/11/2028 चंद्र 20/12/2028 मंगल 17/01/2029 राहु 31/03/2029	शनि 01/07/2029 बुध 21/09/2029 केतु 25/10/2029 शुक्र 29/01/2030 सूर्य 27/02/2030 चंद्र 16/04/2030 मंगल 20/05/2030 राहु 15/08/2030 गुरु 31/10/2030
चंद्र - बुध 31/10/2030 31/03/2032	चंद्र - केतु 31/03/2032 30/10/2032	चंद्र - शुक्र 30/10/2032 01/07/2034	चंद्र - सूर्य 01/07/2034 31/12/2034	मंगल - मंगल 31/12/2034 29/05/2035
बुध 12/01/2031 केतु 11/02/2031 शुक्र 08/05/2031 सूर्य 03/06/2031 चंद्र 16/07/2031 मंगल 16/08/2031 राहु 01/11/2031 गुरु 09/01/2032 शनि 31/03/2032	केतु 13/04/2032 शुक्र 18/05/2032 सूर्य 29/05/2032 चंद्र 16/06/2032 मंगल 28/06/2032 राहु 30/07/2032 गुरु 27/08/2032 शनि 30/09/2032 बुध 30/10/2032	शुक्र 09/02/2033 सूर्य 11/03/2033 चंद्र 01/05/2033 मंगल 05/06/2033 राहु 05/09/2033 गुरु 25/11/2033 शनि 01/03/2034 बुध 27/05/2034 केतु 01/07/2034	सूर्य 10/07/2034 चंद्र 25/07/2034 मंगल 05/08/2034 राहु 01/09/2034 गुरु 26/09/2034 शनि 25/10/2034 बुध 20/11/2034 केतु 30/11/2034 शुक्र 31/12/2034	मंगल 08/01/2035 राहु 31/01/2035 गुरु 20/02/2035 शनि 15/03/2035 बुध 05/04/2035 केतु 14/04/2035 शुक्र 09/05/2035 सूर्य 16/05/2035 चंद्र 29/05/2035
मंगल - राहु 29/05/2035 15/06/2036	मंगल - गुरु 15/06/2036 22/05/2037	मंगल - शनि 22/05/2037 01/07/2038	मंगल - बुध 01/07/2038 28/06/2039	मंगल - केतु 28/06/2039 24/11/2039
राहु 25/07/2035 गुरु 14/09/2035 शनि 14/11/2035 बुध 07/01/2036 केतु 30/01/2036 शुक्र 03/04/2036 सूर्य 22/04/2036 चंद्र 24/05/2036 मंगल 15/06/2036	गुरु 31/07/2036 शनि 23/09/2036 बुध 10/11/2036 केतु 30/11/2036 शुक्र 26/01/2037 सूर्य 12/02/2037 चंद्र 12/03/2037 मंगल 01/04/2037 राहु 22/05/2037	शनि 25/07/2037 बुध 21/09/2037 केतु 14/10/2037 शुक्र 21/12/2037 सूर्य 10/01/2038 चंद्र 13/02/2038 मंगल 08/03/2038 राहु 08/05/2038 गुरु 01/07/2038	बुध 21/08/2038 केतु 11/09/2038 शुक्र 11/11/2038 सूर्य 29/11/2038 चंद्र 29/12/2038 मंगल 19/01/2039 राहु 15/03/2039 गुरु 02/05/2039 शनि 28/06/2039	केतु 07/07/2039 शुक्र 01/08/2039 सूर्य 08/08/2039 चंद्र 21/08/2039 मंगल 29/08/2039 राहु 21/09/2039 गुरु 11/10/2039 शनि 03/11/2039 बुध 24/11/2039

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

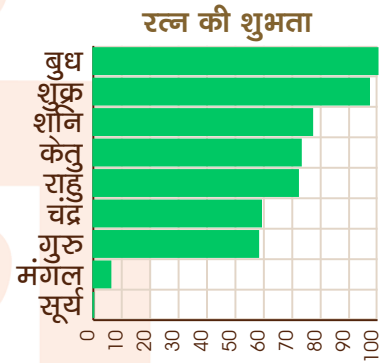
मूलांक	4
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 6, 7
शत्रु अंक	3, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	धन, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	97%	धन, भाग्योदय
नीलम	शनि	77%	धन, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	73%	सुख, धन
गोमेद	राहु	72%	व्यावसायिक उन्नति, धन
मोती	चंद्र	59%	दम्पति, धनार्जन
पुखराज	गुरु	58%	धन, सुख, दम्पति
मूंगा	मंगल	6%	ग्रह कलेश, दुर्घटना, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	धन हानि, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	31/12/1991	9%	44%	6%	100%	58%	100%	77%	72%	73%
केतु	31/12/1998	0%	44%	19%	100%	58%	100%	64%	59%	86%
शुक्र	31/12/2018	0%	44%	6%	100%	58%	100%	83%	78%	80%
सूर्य	30/12/2024	22%	66%	19%	100%	64%	85%	64%	59%	61%
चंद्र	31/12/2034	9%	72%	6%	100%	58%	97%	77%	59%	61%
मंगल	30/12/2041	9%	66%	31%	95%	64%	97%	77%	59%	80%
राहु	31/12/2059	0%	44%	0%	100%	58%	100%	83%	84%	61%
गुरु	31/12/2075	9%	66%	19%	95%	70%	85%	77%	72%	73%
शनि	31/12/2094	0%	44%	0%	100%	58%	100%	89%	78%	61%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
शुभ
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

धन
शत्रु व रोग मुक्ति
दम्पति
दुर्घटना
व्यावसाय



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपकी पत्नी का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पत्नी के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा आप दाम्पत्य जीवन का सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगे। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के मार्ग पर

अग्रसर होंगे तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी तथा दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से अलग रहता है। माता-पिता का स्नेह अधिक नहीं मिलता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर नुकसान पहुँचाते रहते हैं। नाना-नानी या दादा-दादी का प्रायः वियोग होता है। इस योग के प्रभाव से सन्तान कभी अस्वस्थ हो जाते हैं और जातक चिन्ता व परेशानी के घेरे में आ जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को व्यापार व्यवसाय में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। नौकरी व्यवसाय में भी कभी कुछ व्यवधान उपस्थित हो जाता है पर कालान्तर में वह स्वतः नष्ट हो जाता है। जातक को भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है और सरकारी अधिकारियों से कभी अनबन भी हो जाती है।

इस योग के कारण जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी अशान्त या कष्टमय हो जाता है। घर में सुख-शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। सुख-प्राप्ति के लिए विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है और मित्र गण समय पर धोखा दे जाते हैं। परिणामस्वरूप जातक को आंशिक रूप में नुकसान उठाना पड़ता है। आय में कमी रहती है। फलस्वरूप आर्थिक संकट समय-समय पर घेर लेता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है जिसमें जातक को विशेष रूप से प्रसिद्धि मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, बुध, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संहि, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

**महादशा :- चन्द्र
(30/12/2024 - 31/12/2034)**

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 30/12/2024 को आरंभ और 31/12/2034 को समाप्त होगी।

चन्द्र सप्तम भाव में अवस्थित है। सप्तम भाव कानूरी समझोते, साझेदार अर्थात् जीवन साथी, व्यापार, मुकदमें, विदेश में प्रभाव तथा वहां प्राप्त ख्याति और जीवन में खतरे का सूचक है। अतः दस वर्षों की इस अवधि में आपका जीवन सुखी और स्वस्थ होगा। आपका दाम्पत्य जीवन अनुकूल और आनन्ददायक होगा।

स्वास्थ्य :

चंद्र की स्थिति से सप्तम भाव प्रबल हो रहा है। चन्द्र की प्रथम भाव या लग्न पर दृष्टि है, अतः आपका जीवन सुखमय तथा उत्तम होगा और किसी बड़े रोग या चोट की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

सप्तम भाव में अवस्थित चन्द्र भाव को प्रबलित करता है जो साझेदार का भाव है। अतः दस वर्षों की इस अवधि में आपकी संपत्ति और आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। आपका बैंक बैलेंस बढ़ेगा और आपको जीवन के सुखों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

साझेदारी के व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके व्यापार का विकास होगा और यदि नौकरीपेशा हैं तो जीवन में उन्नति के अवसर आएंगे और अपने व्यवसाय का आनन्द प्राप्त करेंगे। यदि व्यवसाय में हैं तो आपके मस्तिष्क में अनेक सुन्दर और अनुकूल व्यवसाय के विचार उभरेंगे जिन्हें चालू किये जाने पर आपको नाम मिलेगा। आप सामाजिक होंगे और व्यवसाय के क्रम में यात्राओं पर जा सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन अनुकूल और उत्तम होगा। आपके व्यक्तित्व और जीवन साथी के स्वास्थ्य में सुधार होगा जिससे आपको वैवाहिक जीवन का सुख मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

मस्तिष्क का कारक चन्द्र आपको धार्मिक ग्रन्थों व पुराणों के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा। आपको उन ग्रन्थों के अध्ययन से आनन्द की प्राप्ति होगी।

अंतर्दशा :- चन्द्र - चन्द्र
(30/12/2024 - 31/10/2025)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 30/12/2024 को प्रारंभ होकर 31/12/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 30/12/2024 को प्रारंभ होकर 31/10/2025 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है और लग्न पर उसकी दृष्टि है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन के खतरों का परिचायक है।

इस अवधि में आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और यात्रा में सफलता मिलेगी।

अगर आप अविवाहित हैं तो इस अवधि में विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। विवाह होने पर लाभान्वित होंगे। साझेदारी के व्यापार में लाभ होगा; साझेदार से संबंध उत्तम रहेंगे। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - मंगल
(31/10/2025 - 01/06/2026)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 30/12/2024 को प्रारंभ होकर 31/12/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 31/10/2025 को प्रारंभ होकर 01/06/2026 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर मंगल कुंडली में 7, 10, 11 भावों पर दृष्टिपात कर रहा है।

इस अंतर्दशा की अवधि में घरेलू सुखों में कमी आ सकती है; माता से विवाद हो सकता है। मित्रों और रिश्तेदारों से भी संबंध बिगड़ सकते हैं।

आपका निवास जन्मस्थान से दूर हो सकता है। वाहनसुख मिलेगा। खेती से आय में वृद्धि होगी, राजनीति में सफलता मिलेगी। इस अवधि में मकान बना सकते हैं। अरिष्ट से बचाव के लिए भौम वेदिक मंत्र के 10,000 जाप करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - राहु
(01/06/2026 - 30/11/2027)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 30/12/2024 को प्रारंभ हुई और 31/12/2034 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 01/06/2026 को प्रारंभ होकर 30/11/2027 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आप अपने कार्य में प्रवीण होंगे, खूब यात्राएं करेंगे। विश्व के कार्यकलापों का ज्ञान बढ़ेगा, प्रसिद्धि मिलेगी। साहस जरूरत से अधिक बढ़ सकता है। वासना में वृद्धि के कारण अवांछित कार्य कर सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - गुरु (30/11/2027 - 31/03/2029)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 30/12/2024 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 30/11/2027 को प्रारंभ होकर 31/03/2029 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभग्रह है और द्वितीय भाव में स्थित होकर कुंडली के 6, 8, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आपको हर काम में सफलता मिलेगी। धन का संचय होगा और पारिवारिक वातावरण सुख-सुविधा से युक्त होगा। व्यायाम द्वारा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कटुता में कमी आएगी। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। ईमानदारी की भावना बढ़ेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के 99 जाप करने के बाद धारण करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - शनि (31/03/2029 - 31/10/2030)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 30/12/2024 को प्रारंभ हुई और 31/12/2034 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 31/03/2029 को प्रारंभ होकर 31/10/2030 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और

परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। शनि द्वितीय भाव में स्थित होकर आपकी कुंडली के 4, 8, 11 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आपकी आय में कमी होगी। मेहनत अधिक और प्राप्ति कम का योग है।

आपकी वाणी कटु हो सकती है, दुख बढ़ेंगे, फालतू भटकने की प्रवृत्ति हो सकती है। अवसर आपके मार्ग में आएंगे मगर आप उनका लाभ उठाने में असफल रहेंगे। पारिवारिक और सामाजिक जीवन में असफलता प्राप्त हो सकती है।

धातु, भंडारण, खनन और श्रमिकवर्ग द्वारा लाभ संभव है।

अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार के दिन शिवजी की उपासना और शनिमंत्र के जाप के बाद धारण करें।

